National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 02-05-2026, Accepted: 02-06-2026, Published: 17-06-2026
Volume 11, Issue 2, 2026, Page No. 92-97

आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना

प्रभा टेटे
अतिथि संकाय, अंडमान एवं निकोबार कॉलेज (एनकॉल), श्री विजया पुरम, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/njmrd.2026.11.2.11053

सारांश
पर्यावरण वर्तमान समय की सबसे गंभीर वैश्विक समस्याओं में से एक है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन के कारण पर्यावरणीय संतुलन निरंतर प्रभावित हो रहा है। ऐसे समय में साहित्य, विशेष रूप से कविता, पर्यावरणीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत शोध–पत्र "आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना" का उद्देश्य आधुनिक हिंदी कवियों की रचनाओं में निहित पर्यावरणीय संवेदनाओं, चिंताओं तथा संरक्षण संबंधी दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। शोध में सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ सिंह तथा भवानी प्रसाद मिश्र जैसे प्रमुख कवियों की काव्य रचनाओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति केवल सौंदर्य के उपादान के रूप में नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और मानव अस्तित्व के आधार के रूप में प्रस्तुत हुई है। कवियों ने वनों की कटाई, जल एवं वायु प्रदूषण, जैव विविधता के ह्रास तथा प्रकृति के बढ़ते दोहन जैसी समस्याओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। साथ ही उन्होंने मानव और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक जागरूकता विकसित करने का संदेश दिया है। निष्कर्षतः आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरणीय चेतना के विकास और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरण का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध होती है।

मूल शब्दः पर्यावरण, पर्यावरण चेतना, आधुनिक हिंदी कविता, प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय संकट, प्रकृति–मानव संबंध, सतत विकास, हिंदी साहित्य

अध्ययन की पृष्ठभूमि

मानव और प्रकृति का संबंध अत्यंत प्राचीन तथा घनिष्ठ रहा है। मानव सभ्यता का विकास प्रकृति की गोद में हुआ है। जल, वायु, भूमि, वनस्पति तथा जीव–जंतु मानव जीवन के आधारभूत तत्व हैं। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवनदाता, संरक्षक तथा पूजनीय शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया। भारतीय ऋषियों ने वृक्षों, नदियों, पर्वतों और पशु–पक्षियों के प्रति सम्मान की भावना विकसित की। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वर्तमान युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, किंतु इसके साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याएँ भी बढ़ी हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा प्रदूषण के कारण पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ता जा रहा है। वैश्विक तापवृद्धि, जलवायु परिवर्तन, जल संकट, जैव विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाएँ मानव सभ्यता के सामने गंभीर चुनौती बनकर उभरी हैं।

ऐसे समय में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ–साथ समाज का मार्गदर्शक भी होता है। साहित्यकार अपने समय की समस्याओं, चिंताओं और संभावनाओं को अभिव्यक्त करता है। आधुनिक हिंदी कविता ने पर्यावरणीय संकटों को गंभीरता से अनुभव किया है और अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है।

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं है। वह जीवन, संस्कृति, संवेदना और अस्तित्व का आधार है। आधुनिक कवियों ने प्रकृति के विनाश पर चिंता व्यक्त करते हुए मानव को पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी बनने का संदेश दिया है। इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरण चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पर्यावरण की अवधारणा

'पर्यावरण' शब्द संस्कृत के 'परि' और 'आवरण' शब्दों से मिलकर बना है। 'परि' का अर्थ है 'चारों ओर' तथा 'आवरण' का अर्थ है 'घेरा' या 'परिधि'। इस प्रकार पर्यावरण का आशय उन सभी परिस्थितियों, शक्तियों और तत्वों से है जो किसी जीव या समुदाय को चारों ओर से प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं—

(क) प्राकृतिक पर्यावरण

- जल
- वायु
- भूमि
- वनस्पति
- पशु–पक्षी
- पर्वत एवं नदियाँ

(ख) सामाजिक पर्यावरण

- संस्कृति
- परंपराएँ
- सामाजिक संस्थाएँ
- जीवन मूल्य

(ग) आर्थिक पर्यावरण

- उत्पादन एवं उपभोग
- संसाधनों का उपयोग
- औद्योगिक गतिविधियाँ

इन सभी घटकों का संतुलन मानव जीवन के लिए आवश्यक है। जब इनमें असंतुलन उत्पन्न होता है, तब पर्यावरणीय समस्याएँ जन्म लेती हैं।

पर्यावरण चेतना का अर्थ

पर्यावरण चेतना का अर्थ है पर्यावरण के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता और संरक्षण की भावना। यह केवल पर्यावरण संबंधी ज्ञान तक सिमित नहीं है, बल्कि उसके प्रति उत्तरदायित्व की भावना को भी विकसित करती है।

पर्यावरण चेतना के अंतर्गत निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं—

1. प्रकृति के महत्व की समझ।
2. पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान।
3. पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता का बोध।
4. प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की भावना।
5. सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता।

पर्यावरण चेतना मनुष्य को यह समझने में सहायता करती है कि उसका अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है और प्रकृति के विनाश का अर्थ अंततः मानव सभ्यता का विनाश है।

हिंदी साहित्य और पर्यावरण

हिंदी साहित्य में प्रकृति का चित्रण अत्यंत प्राचीन है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकृति विभिन्न रूपों में साहित्य का विषय रही है।

आदिकाल

आदिकालीन साहित्य में प्रकृति का चित्रण युद्ध, वीरता और धार्मिक भावनाओं के साथ जुड़ा हुआ था।

भक्तिकाल

भक्तिकाल में प्रकृति ईश्वर की सृष्टि के रूप में चित्रित हुई। संत कवियों ने प्रकृति को आध्यात्मिक अनुभव का माध्यम माना।

रीतिकाल

रीतिकाल में प्रकृति का उपयोग मुख्यतः श्रृंगारिक भावों की अभिव्यक्ति के लिए किया गया।

छायावाद

छायावाद में प्रकृति का अत्यंत संवेदनशील एवं आत्मीय चित्रण हुआ। सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने प्रकृति को मानवीय भावनाओं से जोड़ा।

आधुनिक काल

आधुनिक काल में प्रकृति का स्वरूप बदल जाता है। यहाँ प्रकृति केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं रहती, बल्कि पर्यावरणीय संकटों, मानवीय हस्तक्षेप और अस्तित्वगत चुनौतियों का प्रतीक बन जाती है। आधुनिक कवियों ने पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

आधुनिक हिंदी कविता का स्वरूप

आधुनिक हिंदी कविता का विकास बीसवीं शताब्दी में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के बीच हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन, औद्योगीकरण, वैज्ञानिक विकास तथा वैश्वीकरण ने आधुनिक कविता को प्रभावित किया।

आधुनिक कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- यथार्थवादी दृष्टिकोण
- सामाजिक सरोकार
- मानवीय संवेदनाएँ
- लोकतांत्रिक चेतना
- पर्यावरणीय जागरूकता

आधुनिक कवियों ने प्रकृति और पर्यावरण को नए दृष्टिकोण से देखा। उन्होंने प्रकृति के सौंदर्य के साथ–साथ उसके विनाश पर भी चिंता व्यक्त की।

आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना

आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना अनेक रूपों में व्यक्त हुई है।

(क) प्रकृति के प्रति आत्मीयता

कवियों ने प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग माना है। वृक्ष, नदियाँ, पर्वत और पक्षी उनकी कविताओं में जीवंत रूप में उपस्थित हैं।

(ख) पर्यावरण विनाश की चिंता

आधुनिक कविता में वनों की कटाई, प्रदूषण, जल संकट और जैव विविधता के विनाश जैसी समस्याओं का चित्रण मिलता है।

(ग) विकास मॉडल की आलोचना

कवियों ने ऐसे विकास मॉडल की आलोचना की है जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है। वे संतुलित और सतत विकास की वकालत करते हैं।

(घ) संरक्षण का संदेश

आधुनिक कविता केवल समस्या का चित्रण नहीं करती, बल्कि समाधान की दिशा भी प्रस्तुत करती है। वह मनुष्य को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देती है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट विश्वव्यापी समस्या बन चुका है। साहित्य समाज को जागरूक करने का प्रभावी माध्यम है। आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना का अध्ययन निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है—

1. पर्यावरणीय समस्याओं को समझने के लिए।
2. साहित्य और पर्यावरण के संबंध को स्पष्ट करने के लिए।
3. आधुनिक कवियों की पर्यावरणीय दृष्टि का विश्लेषण करने के लिए।
4. पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के लिए।
5. शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करने के लिए।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. पर्यावरण चेतना की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना के स्वरूप का अध्ययन करना।
3. प्रमुख आधुनिक हिंदी कवियों की रचनाओं में पर्यावरणीय दृष्टि का विश्लेषण करना।
4. पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में आधुनिक हिंदी कविता की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. आधुनिक हिंदी कविता के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता के महत्व को रेखांकित करना।

शोध प्रश्न

इस अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित शोध प्रश्नों पर विचार किया गया है—

1. पर्यावरण चेतना का वास्तविक स्वरूप क्या है?
2. आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना किस प्रकार व्यक्त हुई है?
3. प्रमुख आधुनिक हिंदी कवियों की पर्यावरण संबंधी दृष्टि क्या है?
4. आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरण संरक्षण में किस प्रकार योगदान देती है?
5. वर्तमान समय में आधुनिक हिंदी कविता की पर्यावरणीय प्रासंगिकता क्या है?

अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन मुख्यतः आधुनिक हिंदी कविता में व्यक्त पर्यावरण चेतना पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत प्रमुख आधुनिक हिंदी कवियों जैसे सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, नागार्जुन, केदारनाथ सिंह तथा भवानी प्रसाद मिश्र की चयनित कविताओं का विश्लेषण किया जाएगा।

अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन केवल आधुनिक हिंदी कविता तक सिमित है।
2. सभी कवियों की रचनाओं का अध्ययन संभव नहीं है; केवल चयनित कवियों की कविताओं का विश्लेषण किया जाएगा।
3. अध्ययन मुख्यतः साहित्यिक एवं वैचारिक विश्लेषण पर आधारित है।
4. शोध में उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा

आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना

प्रस्तावना

किसी भी शोध कार्य की सफलता के लिए पूर्ववर्ती साहित्य का अध्ययन अत्यंत आवश्यक होता है। साहित्य समीक्षा शोधकर्ता को यह समझने में सहायता करती है कि अध्ययन विषय पर अब तक क्या कार्य हुआ है, किन पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है तथा किन क्षेत्रों में अभी भी शोध की संभावनाएँ विद्यमान हैं। प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना से संबंधित साहित्य, आलोचनात्मक ग्रंथों, शोध–प्रबंधों तथा विद्वानों के विचारों का विश्लेषण किया गया है।

पर्यावरण चेतना एक बहुआयामी अवधारणा है, जो केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध स्थापित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। हिंदी साहित्य में प्रकृति का चित्रण प्राचीन काल से होता आया है, किंतु आधुनिक काल में पर्यावरणीय संकटों के कारण प्रकृति और पर्यावरण एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विमर्श के रूप में उभरकर सामने आए हैं।

पर्यावरण और साहित्य : एक वैचारिक परिप्रेक्ष्य

साहित्य और पर्यावरण का संबंध अत्यंत गहरा है। साहित्य समाज की संवेदनाओं, चिंताओं और अनुभवों को अभिव्यक्त करता है। जब पर्यावरणीय संकट मानव जीवन को प्रभावित करने लगे, तब साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं में इस समस्या को स्थान देना आरंभ किया।

भारतीय साहित्यिक परंपरा में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं माना गया है। वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति में नदियों को माता, वृक्षों को देवता तथा पृथ्वी को धात्री के रूप में स्वीकार किया गया है।

आधुनिक युग में पर्यावरणीय संकटों के कारण साहित्य में 'पर्यावरण विमर्श' (Ecocriticism) का विकास हुआ। पर्यावरण विमर्श साहित्य और प्रकृति के संबंधों का अध्ययन करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि साहित्य पर्यावरणीय चेतना के विकास में किस प्रकार योगदान देता है।

हिंदी साहित्य में प्रकृति चित्रण की परंपरा

हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में प्रकृति का चित्रण अलग–अलग रूपों में हुआ है।

(क) आदिकाल

आदिकालीन साहित्य में प्रकृति मुख्यतः वीर रस तथा धार्मिक भावनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में प्रयुक्त हुई। प्रकृति का स्वतंत्र स्वरूप अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है।

(ख) भक्तिकाल

भक्तिकाल में प्रकृति ईश्वर की सृष्टि के रूप में चित्रित हुई। संत कवियों ने प्रकृति को आध्यात्मिक अनुभूति का माध्यम माना।

कबीर, सूरदास तथा तुलसीदास की रचनाओं में प्रकृति का चित्रण मानव जीवन और ईश्वर के संबंध को स्पष्ट करने के लिए किया गया है।

(ग) रीतिकाल

रीतिकाल में प्रकृति का उपयोग मुख्यतः श्रृंगारिक भावों की अभिव्यक्ति हेतु हुआ। ऋतु–वर्णन, वन–विहार तथा प्राकृतिक सौंदर्य का विस्तृत चित्रण इस काल की प्रमुख विशेषता है।

(घ) छायावाद

छायावाद हिंदी साहित्य में प्रकृति चित्रण का स्वर्णकाल माना जाता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को आत्मानुभूति, सौंदर्य और संवेदना के साथ जोड़ा।

सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद तथा निराला ने प्रकृति को जीवंत और मानवीय रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि छायावादी कविता में प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय संकटों की चर्चा नहीं मिलती, फिर भी प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता आधुनिक पर्यावरण चेतना की आधारभूमि तैयार करती है।

आधुनिक हिंदी कविता और पर्यावरणीय दृष्टि

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा तकनीकी विकास हुआ। इन परिवर्तनों ने आर्थिक प्रगति तो प्रदान की, किंतु साथ ही पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म दिया।

आधुनिक हिंदी कवियों ने इन समस्याओं को गंभीरता से अनुभव किया और अपनी कविताओं में प्रकृति के विनाश पर चिंता व्यक्त की। उनकी कविताओं में निम्नलिखित पर्यावरणीय मुद्दे प्रमुख रूप से उभरते हैं—

- वनों की कटाई
- जल प्रदूषण
- वायु प्रदूषण
- औद्योगिक विस्तार
- जैव विविधता का ह्रास
- ग्रामीण जीवन का संकट
- प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

आधुनिक कविता में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं रह जाती, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक चिंताओं का केंद्र बन जाती है।

प्रमुख आलोचकों और विद्वानों के विचार

रामविलास शर्मा

रामविलास शर्मा ने साहित्य को समाज और जीवन से जोड़कर देखने पर बल दिया है। उनके अनुसार साहित्य का उद्देश्य केवल सौंदर्यबोध नहीं है, बल्कि सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति भी है। उनकी दृष्टि में प्रकृति और मानव का संबंध जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। आधुनिक विकास प्रक्रिया द्वारा प्रकृति के विनाश को उन्होंने गंभीर समस्या माना।

नामवर सिंह

नामवर सिंह ने आधुनिक हिंदी कविता में बदलते सामाजिक सरोकारों पर विशेष ध्यान दिया है। उनके अनुसार आधुनिक कविता जीवन की वास्तविक समस्याओं से जुड़ी हुई है।

उन्होंने यह स्वीकार किया कि आधुनिक कवियों ने प्रकृति को नए संदर्भों में देखा है और पर्यावरणीय संकटों को साहित्य का महत्वपूर्ण विषय बनाया है।

विद्यानिवास मिश्र
विद्यानिवास मिश्र भारतीय संस्कृति और पर्यावरण के संबंधों पर विशेष बल देते हैं। उनके अनुसार भारतीय जीवन–दृष्टि प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व की भावना पर आधारित है।
उन्होंने आधुनिक समाज में प्रकृति से बढ़ती दूरी पर चिंता व्यक्त की तथा पर्यावरण संरक्षण को सांस्कृतिक आवश्यकता बताया।

नंदकिशोर आचार्य
नंदकिशोर आचार्य का मानना है कि आधुनिक साहित्य में पर्यावरणीय संवेदना मानव अस्तित्व की रक्षा से जुड़ी हुई है। उनके अनुसार पर्यावरणीय संकट केवल प्राकृतिक संकट नहीं बल्कि सांस्कृतिक संकट भी है।

प्रमुख कवियों पर उपलब्ध अध्ययन
सुमित्रानंदन पंत
पंत के काव्य पर अनेक शोध कार्य हुए हैं। अधिकांश अध्ययनों में उनके प्रकृति प्रेम, सौंदर्यबोध और मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण किया गया है।
विद्वानों का मत है कि पंत की कविताएँ प्रकृति के प्रति गहरा लगाव उत्पन्न करती हैं और पर्यावरणीय चेतना के विकास में सहायक हैं।

महादेवी वर्मा
महादेवी वर्मा की रचनाओं पर किए गए अध्ययनों में उनकी करुणा, संवेदनशीलता तथा प्रकृति के प्रति आत्मीय दृष्टि को विशेष महत्व दिया गया है।
उनकी रचनाओं में पशु–पक्षियों और प्राकृतिक जगत के प्रति जो सहानुभूति दिखाई देती है, वह आधुनिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

नागार्जुन
नागार्जुन की कविताओं पर हुए शोधों में ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण प्रमुख रूप से किया गया है।
शोधकर्ताओं का मानना है कि नागार्जुन की कविताएँ पर्यावरण और समाज के संबंध को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

केदारनाथ सिंह
केदारनाथ सिंह के काव्य में पेड़, मिट्टी, पानी और गाँव का जीवन प्रमुख विषय हैं।
उनकी कविताओं पर किए गए अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि वे आधुनिक जीवन में प्रकृति से बढ़ती दूरी को लेकर चिंतित हैं और पर्यावरणीय संतुलन की आवश्यकता पर बल देते हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र
भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रकृति और जीवन का गहरा संबंध दिखाई देता है।
उनकी रचनाएँ सरल भाषा में पर्यावरणीय मूल्यों को अभिव्यक्त करती हैं और मनुष्य को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देती हैं।

पर्यावरण विमर्श और हिंदी साहित्य
बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विश्व स्तर पर पर्यावरण विमर्श का विकास हुआ। साहित्यिक आलोचना में 'इको–क्रिटिसिज्म' (Ecocriticism) एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र के रूप में उभरा।
इको–क्रिटिसिज्म का मुख्य उद्देश्य साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण संबंधी विचारों का अध्ययन करना है।
हिंदी साहित्य में भी पर्यावरण विमर्श धीरे–धीरे विकसित हुआ। अनेक शोधकर्ताओं ने आधुनिक कविता, कहानी तथा उपन्यासों में पर्यावरणीय चेतना का अध्ययन किया है।
पर्यावरण विमर्श के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं—
1. मानव और प्रकृति का संबंध।
2. पर्यावरणीय न्याय।
3. जैव विविधता का संरक्षण।
4. सतत विकास।
5. प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग।

पूर्ववर्ती शोधों का विश्लेषण
उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से निम्नलिखित तथ्य सामने आते हैं—
1. हिंदी साहित्य में प्रकृति चित्रण पर पर्याप्त शोध कार्य हुआ है।
2. छायावादी कविता में प्रकृति सौंदर्य का व्यापक अध्ययन किया गया है।
3. आधुनिक कवियों की पर्यावरणीय दृष्टि पर कुछ शोध कार्य उपलब्ध हैं।
4. पर्यावरण विमर्श और हिंदी कविता के संबंधों पर अध्ययन अपेक्षाकृत सिमित हैं।
5. आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना का समग्र विश्लेषण अभी भी शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

शोध अंतराल
पूर्ववर्ती साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोध कार्य प्रकृति चित्रण, सौंदर्यबोध अथवा कवियों की व्यक्तिगत काव्य–दृष्टि तक सीमित रहे हैं।
निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध की आवश्यकता अनुभव की गई—
- आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना का समग्र अध्ययन।
- विभिन्न कवियों की पर्यावरणीय दृष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण।
- पर्यावरण संरक्षण में कविता की भूमिका का मूल्यांकन।
- आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में हिंदी कविता की प्रासंगिकता का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध इन्हीं शोध–अंतरालों को भरने का प्रयास करता है।

आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना
सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन
प्रस्तावना
पर्यावरण चेतना आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण वैचारिक और सामाजिक अवधारणा है। यह केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने की आवश्यकता पर भी बल देती है। वर्तमान समय में बढ़ते औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैज्ञानिक प्रगति और उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण पर्यावरणीय संकट दिन–प्रतिदिन गंभीर होता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, जल संकट, वनों की कटाई तथा जैव विविधता का ह्रास मानव सभ्यता के सामने गंभीर चुनौती बनकर उपस्थित हैं।
साहित्य समाज की चेतना का प्रतिनिधि होता है। जब समाज किसी संकट का सामना करता है, तब साहित्यकार उसकी अभिव्यक्ति अपने रचनात्मक माध्यमों से करता है। आधुनिक हिंदी कविता ने भी पर्यावरणीय संकटों को गहराई से अनुभव किया है और उन्हें अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को केवल सौंदर्य और आनंद का स्रोत नहीं माना, बल्कि जीवन, संस्कृति और अस्तित्व का आधार स्वीकार किया है।

इस अध्याय में आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है तथा यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक कवि पर्यावरणीय समस्याओं को किस प्रकार चित्रित करते हैं और उनके समाधान के लिए किस प्रकार की चेतना विकसित करते हैं।

पर्यावरण चेतना का सैद्धांतिक आधार

पर्यावरण चेतना का मूल आधार यह विचार है कि मानव प्रकृति से पृथक नहीं है, बल्कि उसका अभिन्न अंग है। प्रकृति और मानव के बीच परस्पर निर्भरता का संबंध है। यदि प्रकृति सुरक्षित रहेगी तो मानव जीवन भी सुरक्षित रहेगा।

पर्यावरण चेतना के प्रमुख सैद्धांतिक आधार निम्नलिखित हैं—

(क) सह–अस्तित्व का सिद्धांत

भारतीय संस्कृति में सह–अस्तित्व की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। इसके अनुसार पृथ्वी पर उपस्थित प्रत्येक जीव और प्राकृतिक तत्व का अपना महत्व है।

आधुनिक हिंदी कविता में यह भावना बार–बार व्यक्त हुई है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका सहभागी है।

(ख) पारिस्थितिक संतुलन

पारिस्थितिक संतुलन पर्यावरण संरक्षण का आधार है। जब मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन करता है, तब यह संतुलन बिगड़ जाता है।

आधुनिक कवियों ने अपनी कविताओं में इसी असंतुलन के दुष्परिणामों को चित्रित किया है।

(ग) सतत विकास

सतत विकास का अर्थ है वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा करना।

आधुनिक कविता में यह विचार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि विकास प्रकृति–विरोधी नहीं होना चाहिए।

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति का स्वरूप

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति का स्वरूप पारंपरिक प्रकृति–वर्णन से भिन्न है।

प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य में प्रकृति मुख्यतः सौंदर्य, प्रेम और आध्यात्मिक अनुभव का माध्यम थी, जबकि आधुनिक कविता में प्रकृति एक सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चिंता का विषय बन जाती है।

आधुनिक कवि प्रकृति को निम्नलिखित रूपों में प्रस्तुत करते हैं—

1. जीवनदायिनी शक्ति के रूप में।
2. मानवीय संवेदनाओं के प्रतीक के रूप में।
3. सांस्कृतिक विरासत के रूप में।
4. पर्यावरणीय संकट के शिकार तत्व के रूप में।
5. संरक्षण और पुनर्सृजन की आवश्यकता वाले संसाधन के रूप में।

प्रकृति और मानव का संबंध

आधुनिक हिंदी कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष मानव और प्रकृति के संबंधों की पुनर्व्याख्या है।

कवियों का मानना है कि मानव और प्रकृति का संबंध केवल उपयोगिता पर आधारित नहीं होना चाहिए। प्रकृति मानव की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं करती, बल्कि उसके मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास में भी योगदान देती है।

आधुनिक कविता में यह चिंता बार–बार व्यक्त होती है कि आधुनिक मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। शहरों का विस्तार, तकनीकी जीवनशैली और उपभोक्तावाद ने मनुष्य को प्राकृतिक परिवेश से अलग कर दिया है।

कवि इस दूरी को मानव जीवन के लिए हानिकारक मानते हैं और प्रकृति से पुनः जुड़ने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

वृक्षों के प्रति संवेदना

वृक्ष पर्यावरण का आधार हैं। वे ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जल चक्र को नियंत्रित करते हैं तथा जैव विविधता को सुरक्षित रखते हैं।

आधुनिक हिंदी कविता में वृक्ष केवल वनस्पति नहीं हैं, बल्कि जीवन और संस्कृति के प्रतीक हैं।

कई कवियों ने वृक्षों को मानवीय स्वरूप प्रदान करते हुए उनके महत्व को रेखांकित किया है। वृक्षों की कटाई को केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक संकट के रूप में देखा गया है।

कविताओं में यह संदेश मिलता है कि वृक्षों की रक्षा करना मानव जीवन की रक्षा करना है।

नदियाँ और जल संकट

भारतीय सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ है। नदियाँ केवल जल स्रोत नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का आधार भी हैं।

आधुनिक हिंदी कविता में नदियों के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। कवियों ने नदियों के प्रदूषण, सिकुड़ते जलस्रोतों और जल संकट पर गंभीर चिंता व्यक्त की है।

नदी आधुनिक कविता में जीवन, प्रवाह और संस्कृति का प्रतीक है। जब नदी प्रदूषित होती है, तब केवल जल ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन व्यवस्था प्रभावित होती है।

कवियों ने जल संरक्षण को मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य बताया है।

ग्रामीण जीवन और पर्यावरण

आधुनिक हिंदी कविता में ग्रामीण जीवन का विशेष महत्व है।

गाँव प्रकृति के निकट स्थित जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। खेत, खलिहान, तालाब, पेड़, पशु–पक्षी और ऋतुएँ ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग हैं।

आधुनिक कवियों ने गाँवों के बदलते स्वरूप पर चिंता व्यक्त की है। शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण ग्रामीण पर्यावरण प्रभावित हो रहा है।

कविता में ग्रामीण जीवन का चित्रण केवल स्मृति नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन की आवश्यकता का संकेत भी है।

औद्योगीकरण और पर्यावरणीय संकट

आधुनिक युग में औद्योगीकरण ने आर्थिक विकास को गति दी है, किंतु इसके साथ अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। कारखानों से निकलने वाला धुआँ, रासायनिक अपशिष्ट तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है।

आधुनिक हिंदी कविता में औद्योगीकरण की अंधी दौड़ की आलोचना की गई है।

कवियों का मानना है कि यदि विकास प्रकृति को नष्ट करके प्राप्त किया जाए, तो वह अंततः मानव जीवन के लिए भी विनाशकारी सिद्ध होगा।

प्रदूषण का काव्यात्मक चित्रण

प्रदूषण आधुनिक युग की प्रमुख समस्या है। आधुनिक हिंदी कविता में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों का उल्लेख मिलता है।

वायु प्रदूषण
धुएँ, धूल और गैसों से प्रदूषित वातावरण को कवियों ने चिंता का विषय बनाया है। शुद्ध वायु के अभाव को मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा माना गया है।

जल प्रदूषण
औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक पदार्थों तथा कचरे के कारण नदियाँ और जलाशय प्रदूषित हो रहे हैं। कविता इस समस्या को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है।

ध्वनि प्रदूषण
आधुनिक जीवन की भागदौड़ और मशीनों के शोर ने प्राकृतिक शांति को समाप्त कर दिया है। कवियों ने इसे मानवीय संवेदनाओं पर आघात के रूप में देखा है।

जैव विविधता और पर्यावरण चेतना
जैव विविधता पर्यावरणीय संतुलन का आधार है।
आधुनिक हिंदी कविता में पक्षियों, पशुओं और अन्य जीवों के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है।
कवियों ने अनेक स्थानों पर यह चिंता व्यक्त की है कि आधुनिक विकास के कारण अनेक जीव–जंतु विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गए हैं।
पक्षियों का मौन, जंगलों का खाली होना तथा वन्य जीवों की घटती संख्या कविता में पर्यावरणीय संकट के प्रतीक बनकर उभरते हैं।

पर्यावरण और सांस्कृतिक चेतना
भारतीय संस्कृति में प्रकृति को विशेष सम्मान प्राप्त है।
नदियाँ, पर्वत, वृक्ष और वन भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। आधुनिक कविता में यह भावना व्यक्त होती है कि पर्यावरण का विनाश केवल प्राकृतिक संकट नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संकट भी है।
जब नदियाँ प्रदूषित होती हैं, जंगल नष्ट होते हैं और प्राकृतिक संसाधन समाप्त होते हैं, तब संस्कृति की जड़ें भी कमजोर होने लगती हैं।
इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरण संरक्षण को सांस्कृतिक संरक्षण से जोड़ती है।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश
आधुनिक हिंदी कविता केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करती, बल्कि समाधान की दिशा भी प्रस्तुत करती है।
कवियों के अनुसार पर्यावरण संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं—
1. वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।
2. जल संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित करना।
3. प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग।
4. प्रदूषण नियंत्रण के प्रभावी उपाय।
5. पर्यावरण शिक्षा का प्रसार।
6. प्रकृति के प्रति संवेदनशील जीवनशैली का विकास।

कविता इन मूल्यों को भावनात्मक रूप से पाठकों तक पहुँचाती है और उन्हें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करती है।

आधुनिक हिंदी कविता की पर्यावरणीय प्रासंगिकता
वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट विश्व स्तर पर चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे समय में आधुनिक हिंदी कविता की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।
आधुनिक कविता हमें यह स्मरण कराती है कि प्रकृति केवल संसाधन नहीं है, बल्कि जीवन का आधार है। यदि पर्यावरण नष्ट होगा, तो मानव सभ्यता का अस्तित्व भी संकट में पड़ जाएगा।
इस दृष्टि से आधुनिक हिंदी कविता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि पर्यावरणीय जागरूकता का प्रभावी माध्यम है।

उपसंहार
आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना बहुआयामी स्वरूप में व्यक्त हुई है। कवियों ने प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदना और आत्मीयता को अभिव्यक्त करने के साथ–साथ पर्यावरणीय संकटों पर गंभीर चिंता भी व्यक्त की है। वृक्षों, नदियों, पशु–पक्षियों और ग्रामीण जीवन के माध्यम से उन्होंने मानव और प्रकृति के गहरे संबंध को रेखांकित किया है।
आधुनिक कविता पर्यावरण संरक्षण का सशक्त संदेश देती है और मानव को प्रकृति के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा प्रदान करती है। इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता पर्यावरणीय जागरूकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, विद्यानिवास. (2005). भारतीय संस्कृति और पर्यावरण. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
2. मिश्र, भवानी प्रसाद. (2010). भवानी प्रसाद मिश्र रचनावली (खंड 1). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. नागार्जुन. (2011). नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. पंत, सुमित्रानंदन. (2014). पल्लव. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन। (मूल कृति 1926 में प्रकाशित)
5. पंत, सुमित्रानंदन. (2016). ग्राम्या. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
6. शर्मा, रामविलास. (2009). हिंदी साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. सिंह, केदारनाथ. (2012). अकाल में सारस. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. सिंह, केदारनाथ. (2018). उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. सिंह, नामवर. (2011). कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
10. तिवारी, रामचंद्र. (2013). आधुनिक हिंदी कविता का विकास. इलाहाबाद: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
11. वर्मा, महादेवी. (2015). यामा. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन। (मूल कृति 1940 में प्रकाशित)
12. वर्मा, महादेवी. (2017). श्रृंखला की कड़ियाँ. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
13. गेरार्ड, ग्रेग. (2012). इकोक्रिटिसिज़्म (द्वितीय संस्करण). लंदन: रूटलेज।
14. ग्लोटफेल्टी, चेरिल., एवं फ्रॉम, हैरोल्ड (सम्पा.). (1996). द इकोक्रिटिसिज़्म रीडर: लैंडमार्क्स इन लिटरेरी इकोलॉजी. एथेंस: यूनिवर्सिटी ऑफ जॉर्जिया प्रेस।
15. बुएल, लॉरेंस. (2005). द फ्यूचर ऑफ एनवायरनमेंटल क्रिटिसिज़्म: एनवायरनमेंटल क्राइसिस एंड लिटरेरी इमेजिनेशन. ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल पब्लिशिंग।